Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
पुस्तक - एकांकी संचय
पाठ-5 'महाभारत की एक साँझ' (एकांकी) लेखक - भरत भूषण अग्रवाल
एकांकी का शेष भाग (पृष्ठ संख्या 72, 73, 74)

दुर्योधन धर्म की दुहाई देते हुए युधिष्ठिर से कहता है कि एक निहत्थे पर वार करना धर्म के विरुद्ध है और युद्ध के नियम के अनुसार एक व्यक्ति से एक ही लड़ेगा। युधिष्ठिर शेवर में छिपे दुर्योधन को दुष्ट कहकर संबोधित करते हुए बताता है कि निहत्था बालक अभिमन्यु भी था। तुम्हारे सभी महारथियों ने अभिमन्यु को चक्रव्यूह में घेर लिया था। अभिमन्यु सभी महारथियों का सामना करता हुआ सातों द्वारों को भेदता इस व्यूह में फँस गया। उसके सभी शस्त्र टूट गए। वह निहत्था हो गया तब सातों द्वारों के सातों महारथी एक साथ उस पर टूट पड़े और उसका वध कर दिया।

पांडवों ने जुए में हारने के बाद शर्त के अनुसार बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास व्यतीत किया था। उनके ये तेरह वर्ष कष्टपूर्ण बीते। अज्ञातवास के बाद पांडव दुर्योधन के सामने आए तो उन्होंने दुर्योधन से अपने आधे राज्य की माँग की। श्रीकृष्ण दूत बनकर दुर्योधन की सभा में गए और युधिष्ठिर का प्रस्ताव रखा। जब दुर्योधन नहीं माना तो श्रीकृष्ण ने कहा कि यदि दुर्योधन उन्हें पाँच गाँव दे दे तो भी युधिष्ठिर समझौता कर लेंगे। लेकिन दुर्योधन अपनी हठ पर रहा और उसने क्रोधित होकर कहा कि बिना युद्ध किए वह उन्हें एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं देगा।

अतः युधिष्ठिर ने दुर्योधन को उसके द्वारा एक निहत्थे बालक अभिमन्यु को सात महारथियों द्वारा मिलकर मारने के लिए अधर्म की याद दिलाई और आधा राज्य तो दूर सुई की नोक के बराबर भी भूमि न देने की ज़िद्द का

स्मरण भी करवाया। युधिष्ठिर ने दुर्योधन को उसकी वीरता पर धिक्कारा। दुर्योधन, युधिष्ठिर से कहता है कि एक निहत्थे व थके हुए व्यक्ति को घेरकर वीरता का उपदेश देना सरल है। अब मैं खून से सने सिहांसन पर बैठकर राज्य करने का इच्छुक नहीं हूँ। तुम निश्चिंत मन से जाकर राज्य का सुख प्राप्त करो। मैं वन में जाकर भगवान की भक्ति में दिन बिताऊँगा। तब भीम उसकी इस सारी कूटनीति को व्यर्थ बताता है और उसे बाहर निकलकर युद्ध के लिए कहता है। दुर्योधन ने युधिष्ठिर से कहा कि मैंने जो कुछ भी किया अपनी रक्षा के लिए किया। मैं जीना चाहता था और मेल से रहना चाहता था। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारे रहते मेरी यह कामना अथवा यह सामान्य सी इच्छा भी पूरी न हो सकेगी।

भीम ने दुर्योधन से कहा कि पाखण्डी तुझे झूठ बोलने में लज्जा नहीं आती। युधिष्ठिर ने दुर्योधन से कहा कि यदि हम तुम्हें दया करके छोड़ भी देंगे फिर तू कुचक्र रचेगा और फिर लड़ने के लिए आएगा। युद्ध तो फिर भी करना पड़ेगा। बिना युद्ध किए पीछा नहीं छूटेगा तो इससे अच्छा अभी तुम्हारा काम तमाम कर दें ताकि बाद में शांति स्थापित हो सके। युधिष्ठिर ने दुर्योधन को ऐसे कायर की श्रेणी में बताया जो पहले वीरता का बखान बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं और अन्त में अपने प्राण संकट में फँसे जानकर करुणा की भीख माँगते हैं। शत्रु के सामने प्राण-रक्षा की प्रार्थना करते हैं। युधिष्ठिर ने कहा कि हम अधर्म से तुम्हारी हत्या नहीं करेंगे। हम तुम्हें कवच और अस्त्र देंगे। केवल एक ही व्यक्ति तुमसे लड़ेगा। यदि जीत गए तो सारा राज्य तुम्हारा। इस प्रकार युधिष्ठिर ने दुर्योधन ने धर्म की बात कही।

इधर दुर्योधन की दशा शोकाकुल है। उसे जय-पराजय लाभ-हानि, यश-अपयश जैसी लौकिक उपलब्धियों से विरक्ति हो गई है। उसकी लालच, स्वार्थलिप्सा और हठधर्मिता के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ जिसमें दोनों पक्षों के लाखों वीर और निकट संबंधी मारे गए। इसी युद्ध में उसके

सभी भाइयों को मौत की नींद सोना पड़ा। अपनी आँखों के सामने अपने कुल-परिवार, भाई-बन्धु, गुरुजन तथा अन्य निकट संबंधियों की मृत्यु जिसके लिए वह स्वयं ज़िम्मेदार था, यह सोचकर उसका मन विरक्ति से भर गया।

युधिष्ठिर ने दुर्योधन को ललकारते हुए कहा कि हम तुम्हारी अधर्मपूर्वक हत्या करके बधिक (वध करने वाला, जल्लाद) नहीं कहलाना चाहते हैं। हम वीरों की भांति युद्ध करेंगे और तुम्हें कवच और तुम्हारी पसंद का अस्त्र देंगे ताकि तुम अपनी पसंद के अस्त्र से हम में से किसी एक के साथ युद्ध कर सको। इस युद्ध में तुम जीतोगे तो राज्य तुम्हारा हो जाएगा। यही जीत की संभावना दुर्योधन को मरुस्थल की बूँद के समान लग रही थी। पांडवों पर मिलने वाली संभावित जीत भी अब उसे खुशी नहीं दे पा रही थी। दुर्योधन के अनुसार युधिष्ठिर की इच्छा और महत्त्वकांक्षा यही है कि उसकी (दुर्योधन के) मृत देह पर अपना जयस्तंभ उठाए अर्थात् उसको मारे बिना पांडव को अपनी विजय अधूरी लग रही है। वे दुर्योधन के प्राण लेकर ही अपनी जीत को पूर्ण समझेंगे।

युधिष्ठिर द्वारा युद्ध के लिए अस्त्र चुनने का विकल्प दिए जाने पर दुर्योधन ने गदा को अस्त्र के रूप में चुना और गदा युद्ध करने का निश्चय किया।

इधर हस्तिनापुर में संजय अपनी दिव्य दृष्टि से धृतराष्ट्र को दुर्योधन के साथ घटने वाली हर घटना की जानकारी दे रहे हैं। संजय ने दुर्योधन को 'सुयोधन' कहा। वास्तव में दुर्योधन का नाम सुयोधन ही था लेकिन अपने दुष्कर्मों के आधार पर उसे दुर्योधन कहने लगे थे। संजय ने धृतराष्ट्र को दुर्योधन का भीम के साथ गदा युद्ध की जानकारी देते हुए बताया कि भीम का दुर्योधन के साथ गदा युद्ध हो रहा है। दुर्योधन बहुत वीरता से लड़ रहे थे ऐसा लगता था मानो विजय दुर्योधन की होगी तभी श्रीकृष्ण का संकेत पाकर भीम ने पूरी शक्ति से दुर्योधन की जंघा पर प्रहार किया। दुर्योधन चीत्कार के साथ भूमि पर गिर पड़े और अंतिम साँसें गिनने लगे।

दुर्योधन के गिरते ही पाण्डव हर्ष ध्वनि करते हुए अपने शिविर को लौट आए।

संध्या होते ही अश्वत्थामा दुर्योधन से मिलने आया। वह गुरु द्रोणाचार्य का पुत्र था। कहते हैं उसे अमरता का वरदान प्राप्त था। महाभारत के युद्ध के बाद भी वह जीवित रहा। उसके और उसके पिता द्रोणाचार्य ने दुर्योधन के पक्ष में युद्ध किया था। जब अश्वत्थामा ने दुर्योधन की दशा देखी तो वह बहुत दुःखी हुआ और कहा कि वह आपकी दशा ऐसी करने वालों से बदला अवश्य लेगा। कहते हैं अश्वत्थामा ने दुर्योधन को प्रसन्न करने के लिए कहा कि वह दुर्योधन को पाण्डवों के सिर लाकर भेंट करेगा। इसी उद्देश्य से रात में छिपकर वह पाण्डवों के शिविर में गया और पाण्डवों के पाँच सोते हुए बालकों के सिर काटकर ले आया और दुर्योधन को दे दिए। दुर्योधन को जब यह पता चला कि वे सिर पाण्डवों के नहीं बल्कि उनके बच्चों के हैं, तो वह इस जघन्य पाप पर विलाप कर उठा। दुर्योधन के आहत होकर गिरने पर सहानुभूति प्रकट करने युधिष्ठिर उसके पास आए। उनके मन में द्वेष की भावना नहीं थी। वे सच्चे हृदय से साधारण पुरुष के समान उससे मिलने आए और जो कुछ हुआ उस पर दुःख प्रकट करने आए थे। लेकिन दुर्योधन ने उसे उलटे रूप में लिया। उसने कहा कि जीवनभर तुमने मुझे चैन नहीं लेने दिया अब अंतिम समय में शांति से मरने दो और चले जाओ।

बच्चो! आज हम एकांकी को यहीं विराम देते हैं। सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 74 तक पढ़ेंगे व समझने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

" अरे नीच! अब भी तेरा गर्व चूर नहीं हुआ ------
------ हम तेरी थोथी बातों से डर जाएँगे।"

(पाठ्य पुस्तक पृष्ठ सं.-71, पहला अनुच्छेद, संवाद - युधिष्ठिर।)

प्रश्न (क) उपर्युक्त कथन किसने, किससे कहे हैं ? किसका गर्व अभी चूर नहीं हुआ था ? वक्ता ने ऐसा क्यों कहा है ?

(ख) यदि बल है तो आ न बाहर' वक्ता ने किसे, कब तथा क्यों ललकारा है ?

(ग) अरे नीच ! का संबोधन किसके लिए प्रयोग किया गया है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(घ) वक्ता ने श्रोता की किन थोथी बातों का उल्लेख किया है और क्यों ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]